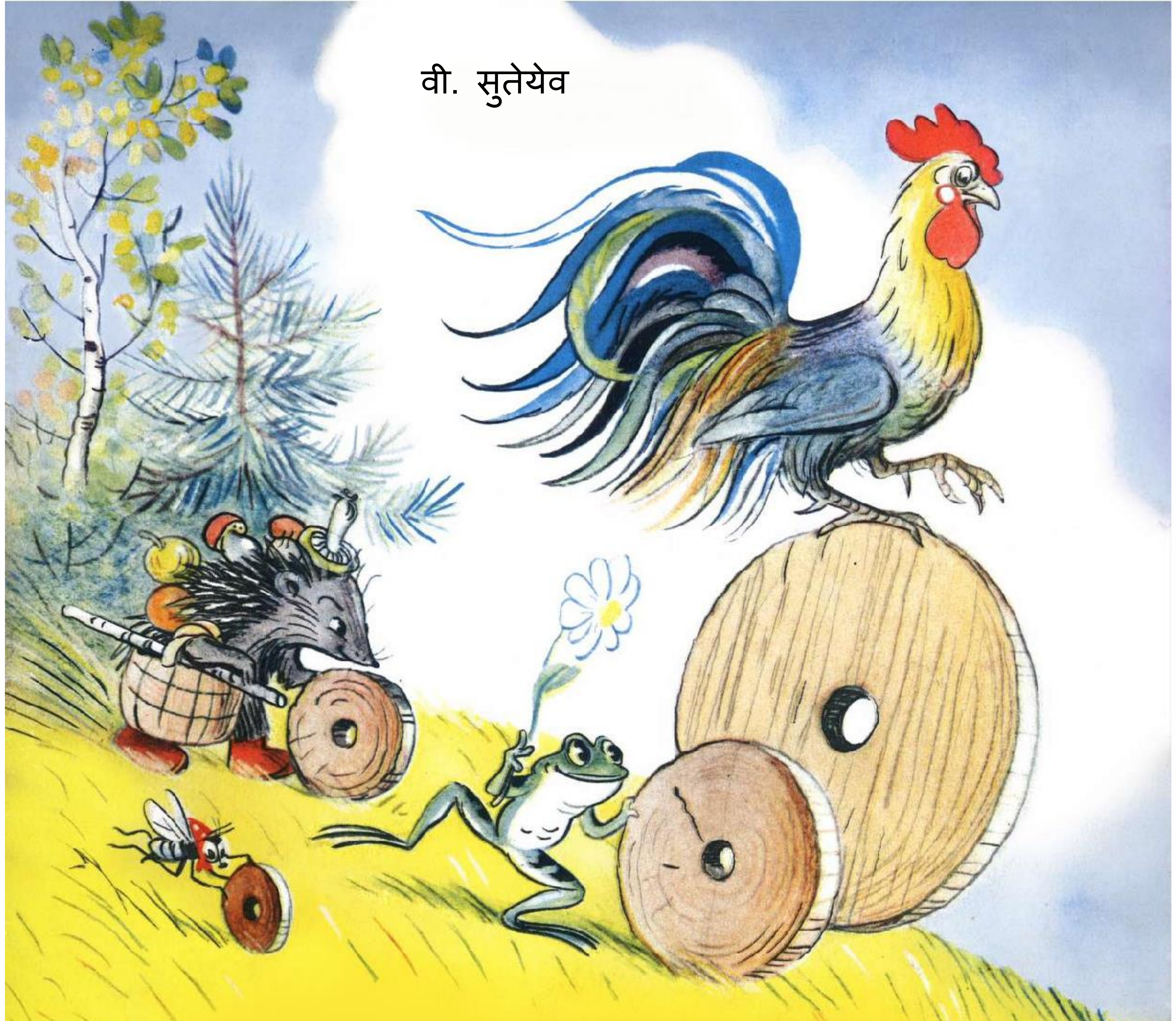
वी. सुतेयेव



अलग-अलग पहिए

वी. सुतेयेव



अलग-अलग पहिए



हिंदी: अरविन्द गुप्ता





अलग-अलग पहिए

सुनो, सुनो! एक पेड़ के तने पर, एक छोटे से घर में, एक मक्खी, एक मेंढक, एक साही और एक पीले रंग की कलगी वाला मुर्गा रहता था.



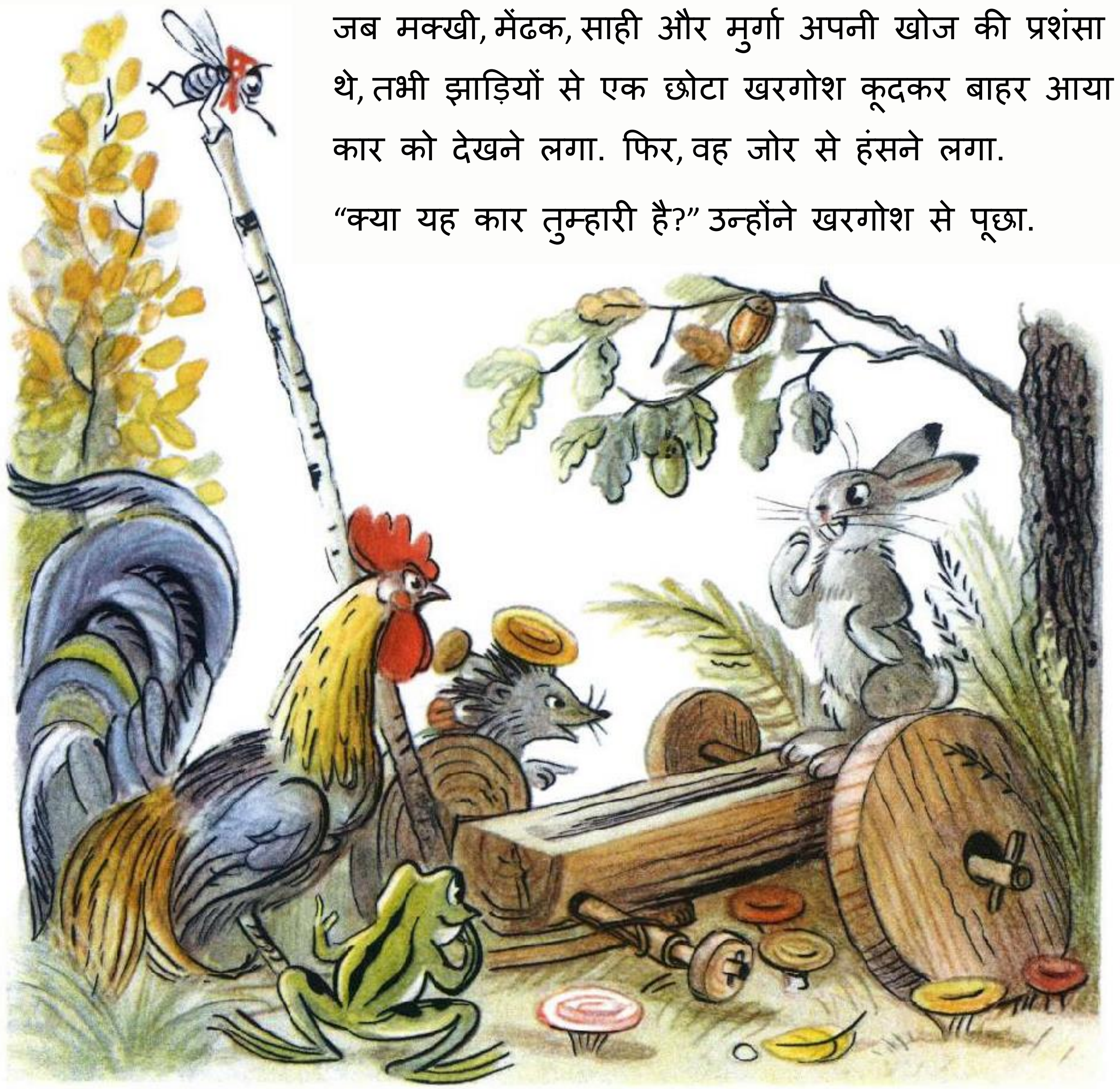
एक दिन, मेंढक, साही और मुर्गा फूल, मशरूम, टहनियाँ और फल इकट्ठा करने के लिए जंगल में गए. जब वे चल रहे थे, तो मक्खी उनके ऊपर से उड़ रही थी.

जंगल के बीच में, वे एक खुली जगह पर पहुँचे और वहाँ उन्हें कुछ अजीब-सी चीज़ मिली - एक छोटी सी मज़ेदार कार. उसमें कोई नहीं था, और उसके सभी पहिए बेमेल थे. हर पहिया अलग-अलग आकार का था.

पहला पहिया बहुत छोटा था, दूसरा थोड़ा बड़ा, तीसरा मध्यम आकार का और चौथा बहुत बड़ा था. कार शायद वहां कई सालों से वहीं पड़ी थी, क्योंकि उसके नीचे मशरूम उग रहे थे.

जब मक्खी, मेंढक, साही और मुर्गा अपनी खोज की प्रशंसा कर रहे थे, तभी झाड़ियों से एक छोटा खरगोश कूदकर बाहर आया और कार को देखने लगा. फिर, वह जोर से हंसने लगा.

“क्या यह कार तुम्हारी है?” उन्होंने खरगोश से पूछा.



“नहीं, नहीं,” खरगोश ने कहा. “यह भालू की है. उसने इसे बनाने में बहुत मेहनत की, लेकिन वो इसे पूरा नहीं कर सका. देखो, इस पर उसका निशान भी है.”

साही ने कहा, “चलो इसे हम अपने घर ले चलते हैं—शायद यह किसी दिन काम आए.”

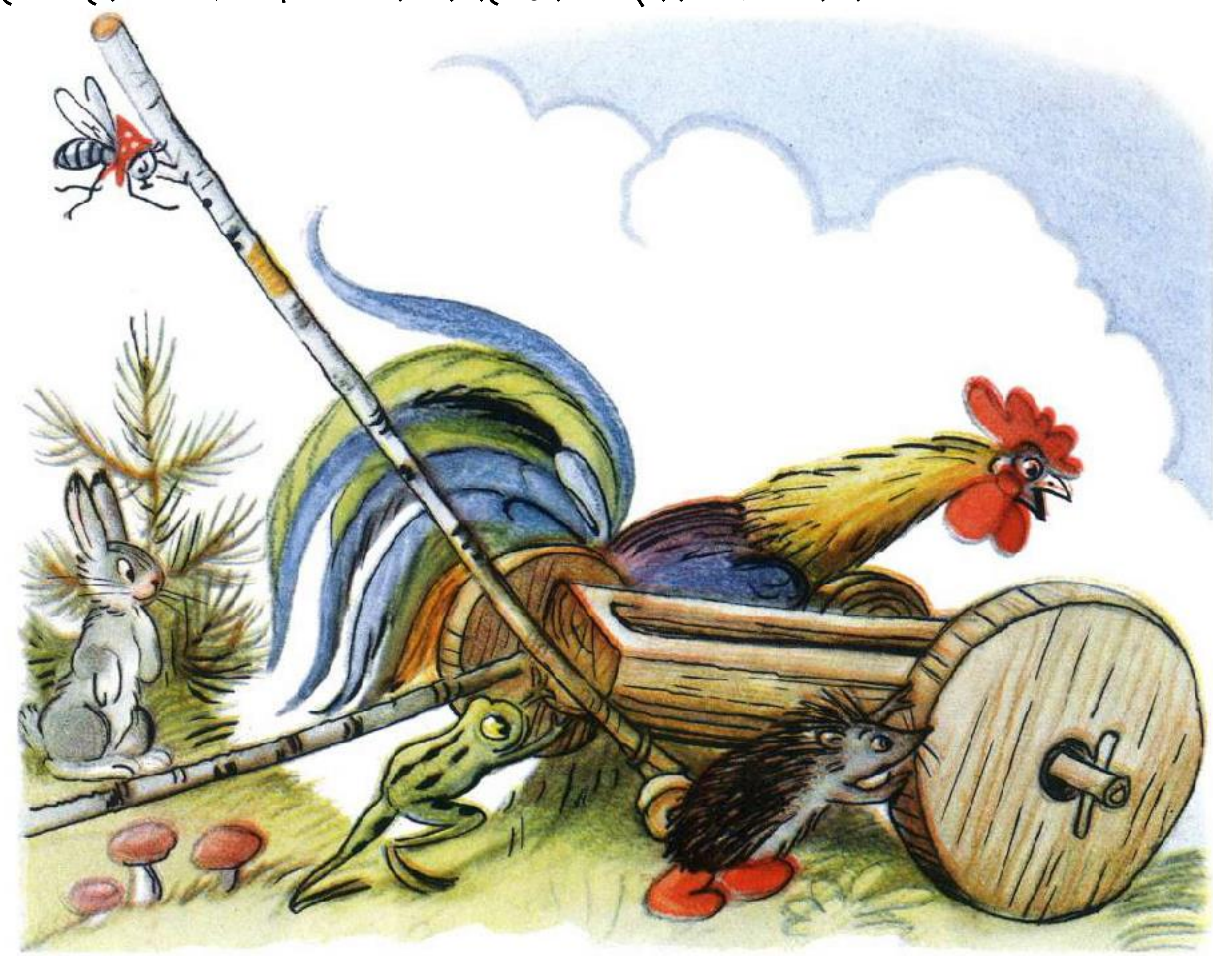
मक्खी, मेंढक और मुर्गा सहमत हो गए, और वे सभी कार को धक्का देने लगे. लेकिन कार बिलकुल आगे नहीं बढ़ी. पहियों के अलग-अलग माप, कार को आगे नहीं बढ़ने दे रहे थे.

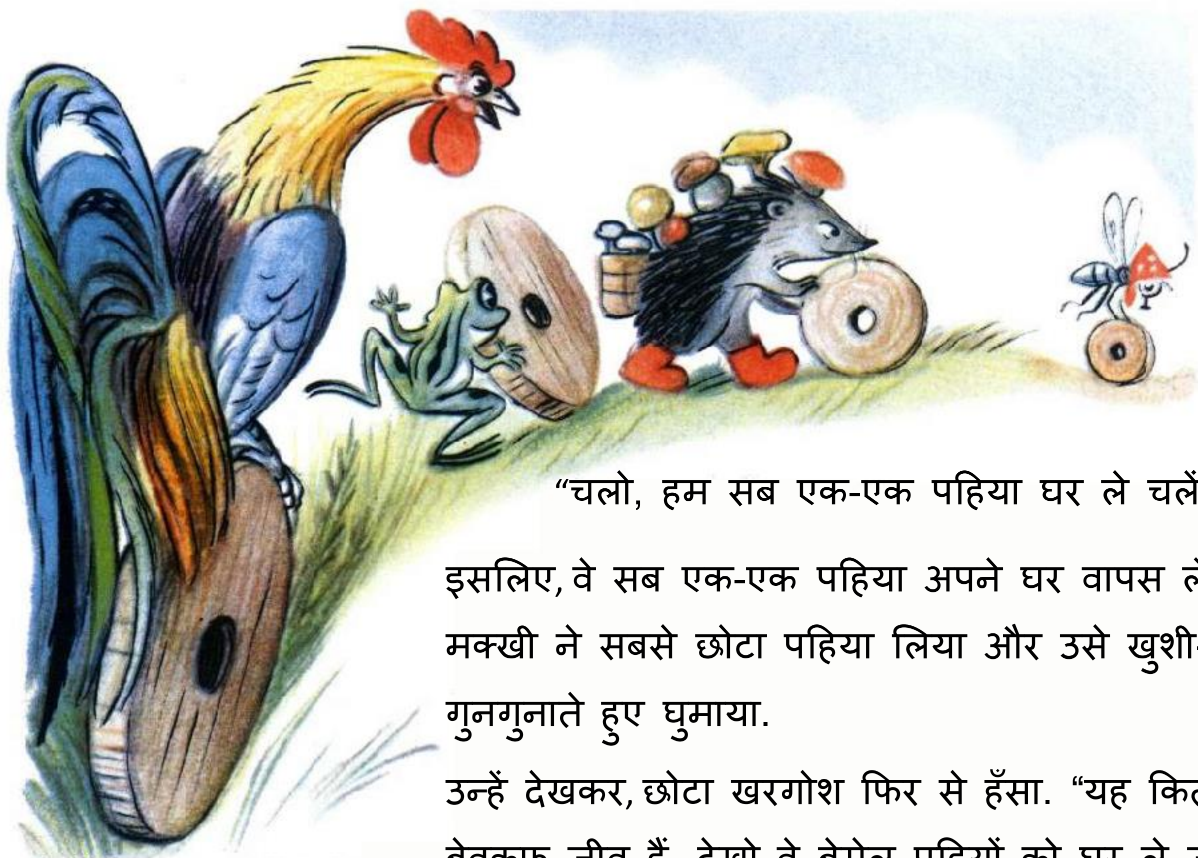
सब ने मिलकर धक्का दिया, लेकिन कार हिली तक नहीं. वो बस एक तरफ झुक गई क्योंकि रास्ता ऊबड़-खाबड़ और गड्ढों से भरा था.

यह देखकर, छोटा खरगोश इतनी जोर से हंसा कि उसका पेट लगभग फट गया.

“यह एकदम बेकार कार है!” खरगोश ने हंसते हुए कहा.

मक्खी, मेंढक, साही और मुर्गा धक्का देते-देते थक गए थे, लेकिन वे गाड़ी को छोड़कर जाना नहीं चाहते थे. शायद वे किसी तरह उसका इस्तेमाल कर सकें.





"चलो, हम सब एक-एक पहिया घर ले चलें!"

इसलिए, वे सब एक-एक पहिया अपने घर वापस ले आए. मक्खी ने सबसे छोटा पहिया लिया और उसे खुशी-खुशी गुनगुनाते हुए घुमाया.

उन्हें देखकर, छोटा खरगोश फिर से हँसा. "यह कितने बेवकूफ जीव हैं. देखो, वे बेमेल पहियों को घर ले जा रहे हैं!"

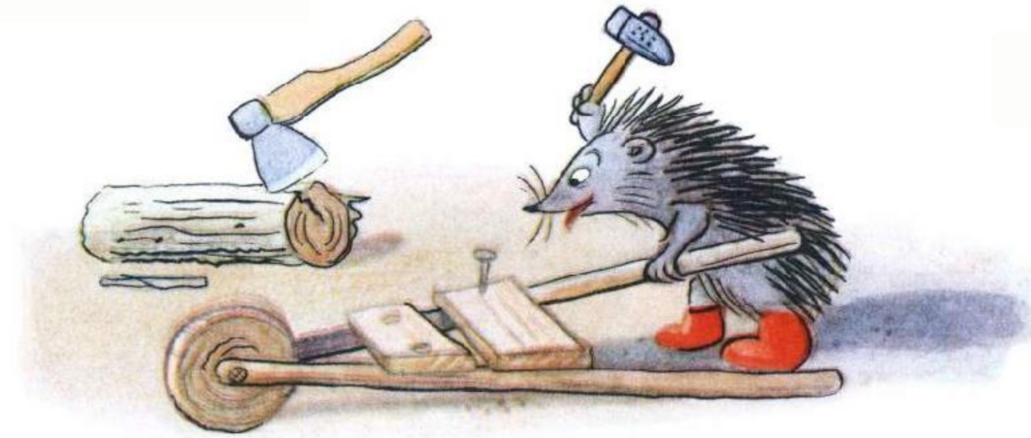
फिर खरगोश झाड़ियों में वापस कूद गया.

जब मक्खी, मेंढक, हाथी और मुर्गा अपने-अपने पहियों के साथ घर पहुँचे, तो वे सोचने लगे कि वे उनके साथ क्या करें.

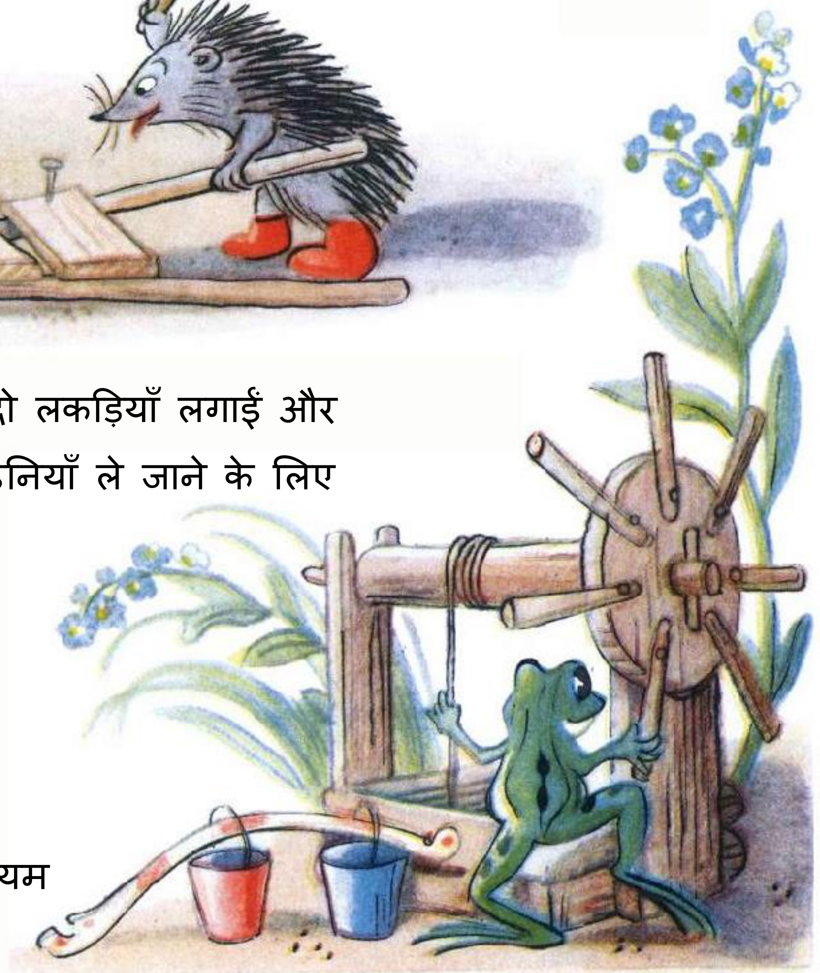


मक्खी ने कहा, "मुझे पता है!" और उसने सबसे छोटे पहिये को धागा बनाने के लिए एक चरखे में बदल दिया.

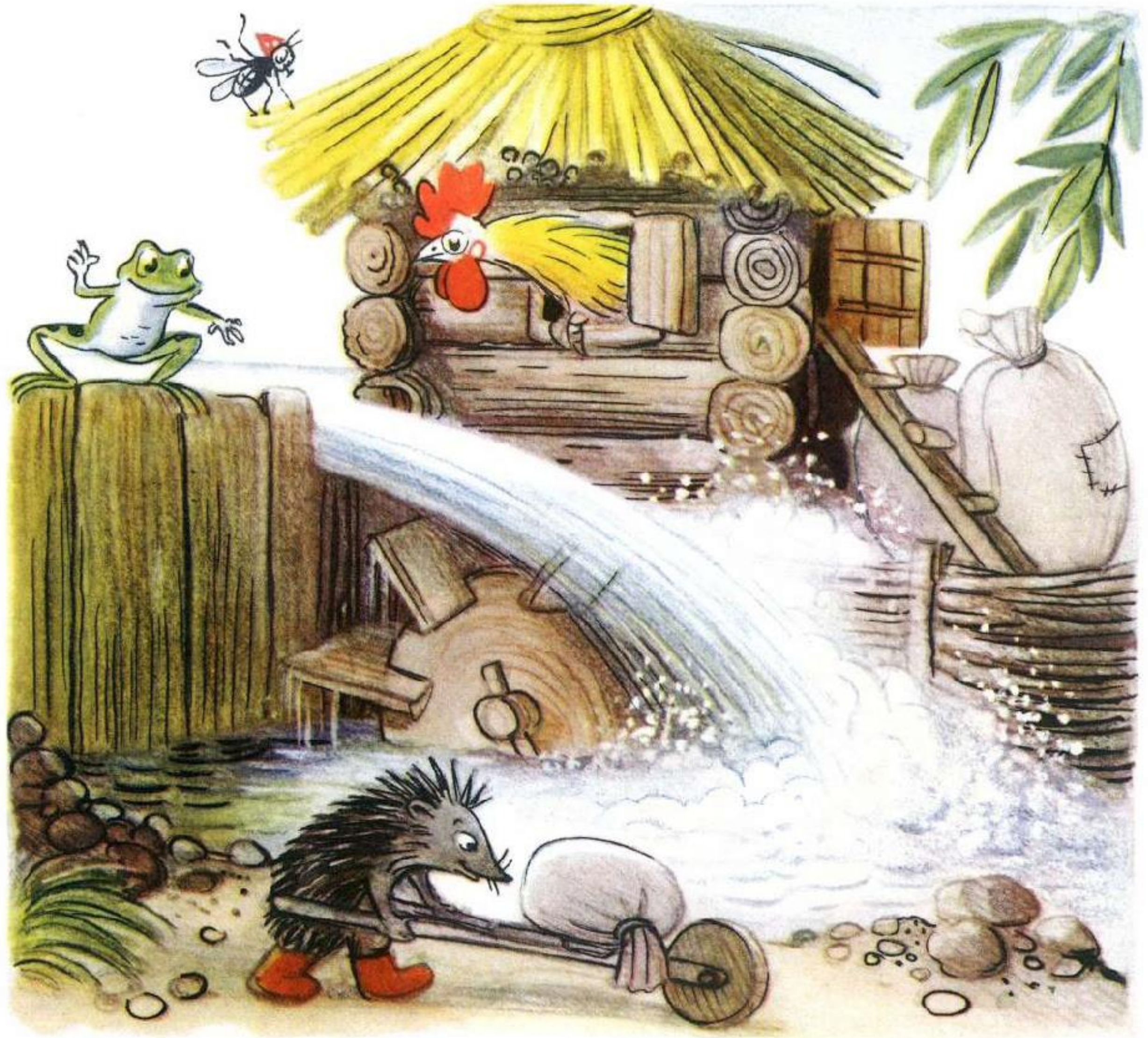




साही ने अपने पहिये में दो लकड़ियाँ लगाईं और जंगल से मशरूम और टहनियाँ ले जाने के लिए एक गाड़ी बनाई.



मेंढक ने बहुत सोचा, और फिर उसके दिमाग में एक विचार आया. उसने मध्यम आकार के पहिये का इस्तेमाल कुएँ से पानी खींचने के लिए चरखी के रूप में किया.



मुर्गे ने सबसे बड़े पहिये का इस्तेमाल करके एक पानी की चक्की बनाई.

इस तरह, सभी अलग-अलग आकार के पहियों का अच्छा इस्तेमाल हुआ. मक्खी ने अपने चरखे से धागा काता, मेंढक ने बगीचे के लिए पानी निकाला, साही ने मशरूम और जलाऊ लकड़ी इकट्ठी की और मुर्गे ने अपनी चक्की से आटा पीसा.

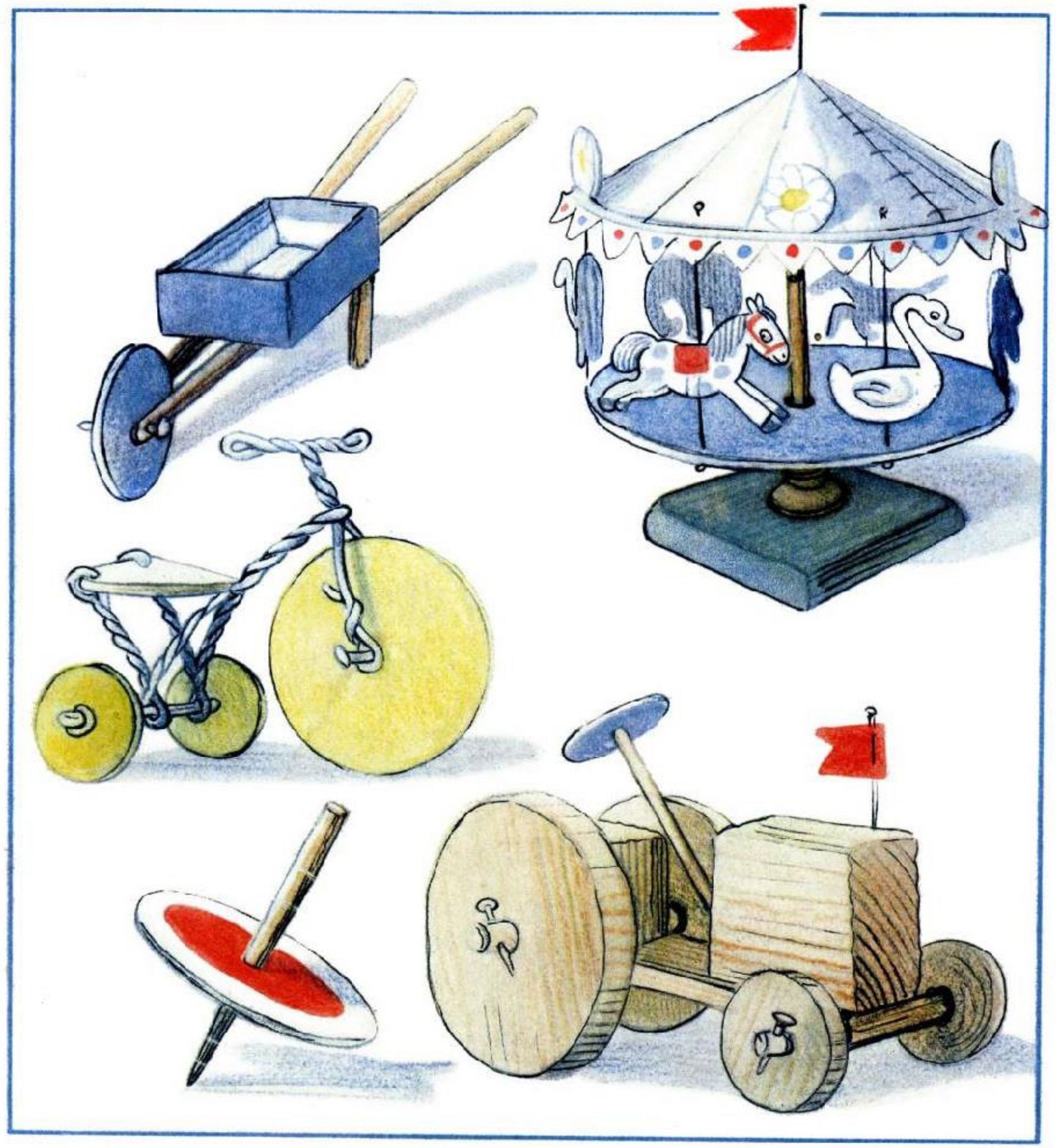
एक दिन, छोटा खरगोश यह देखने आया कि उसके दोस्त कैसे थे.

वे सभी खरगोश को देखकर बहुत खुश हुए!

मक्खी ने उसे अपने बनाए हुए गर्म दस्ताने दिए, मेंढक ने बगीचे से गाजर लाकर दी, साही ने मशरूम और बेर दिए और मुर्गे ने उसे रोटी और केक दिया.

खरगोश, इस बात पर शर्मिंदा हुआ कि वो पहले उन पर हँसा था. उसने कहा, “माफ करना दोस्तों, अब मैं देख रहा हूँ कि अलग-अलग आकार के पहिये भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं, अगर कोई उन्हें इस्तेमाल करना जानता हो.”





ज़रा इन खिलौनों को देखो — तुम देखोगे, इन सभी में अलग-अलग तरह के पहिये लगे हैं. पहियों से बहुत सारे खिलौने बनाए जा सकते हैं! कार्डबोर्ड, पतली लकड़ी या बटन से कुछ पहिए बनाने की कोशिश करें और देखें कि हम कितने मज़ेदार खिलौने बना सकते हैं!

नावें



एक दिन, एक मेंढक, एक चूहा, एक चूहा, एक चींटी और एक लेडी-बर्ड टहलने के लिए निकले.



जल्द ही, वे नदी के किनारे पहुँच गए.

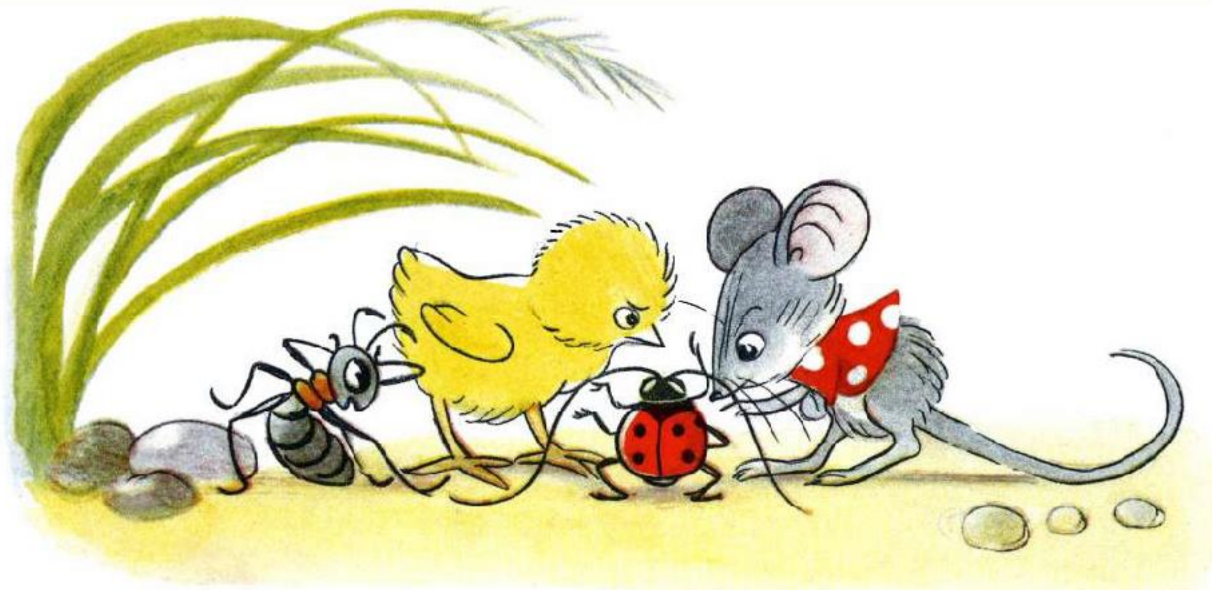
"चलो तैरते हैं," मेंढक ने पानी में कूदते हुए कहा.

चूहा, चूहा, चींटी और लेडी-बर्ड चिल्लाए,

"लेकिन हम तैर नहीं सकते!"



"टर्र! टर्र!" मेंढक हँसा. "तो बताओ कि तुम क्या कर सकते हो?"
वह इतना हँसा कि उसकी साँस लगभग फूल गई.



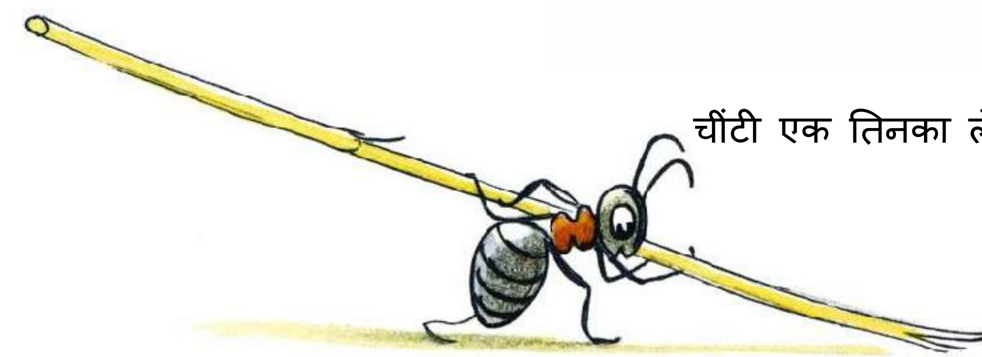
चूहा, चूहा, चींटी और लेडी-बर्ड गुस्सा हुए. वे सोचने लगे कि वे क्या कर सकते हैं. उन्होंने सोचा और सोचा, और फिर उनके दिमाग में एक शानदार विचार आया. और उन्होंने यह किया.



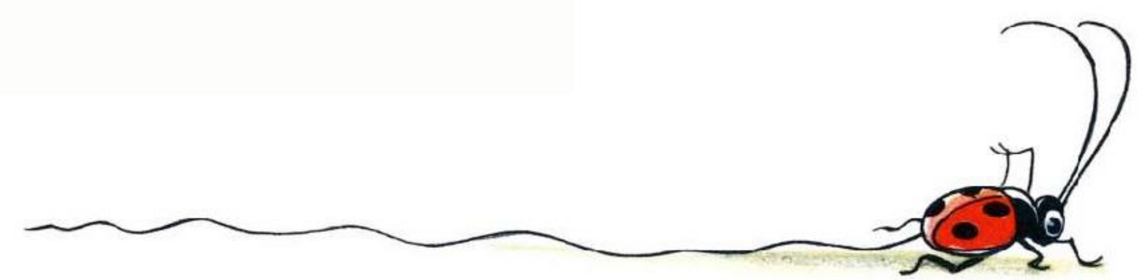
चूहा गया और जल्द ही एक पत्ता लेकर वापस आया.

चूहा आधा अखरोट का खोल लेकर आया.





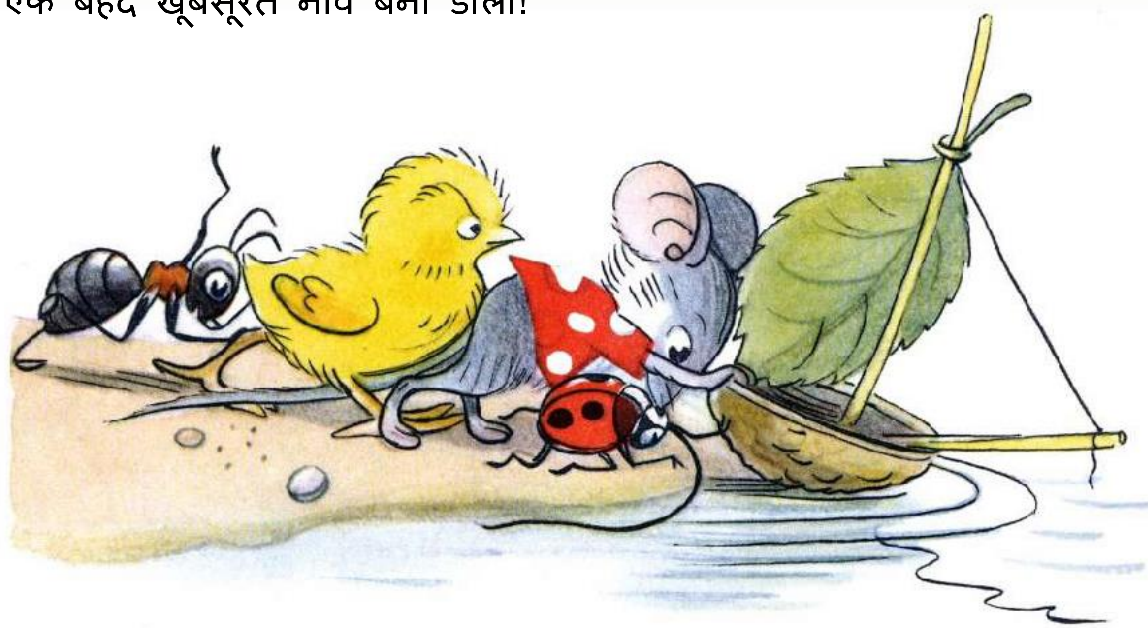
चींटी एक तिनका लेकर आई.



और लेडी-बर्ड को काली डोरी का एक लंबा टुकड़ा लाई.



फिर वे सब काम पर लग गए. उन्होंने अखरोट के खोल के नीचे तिनके को चिपका दिया और एक धागे से पत्ता उससे बांध दिया. बस एक मिनट में, उन्होंने एक बेहद खूबसूरत नाव बना डाली!

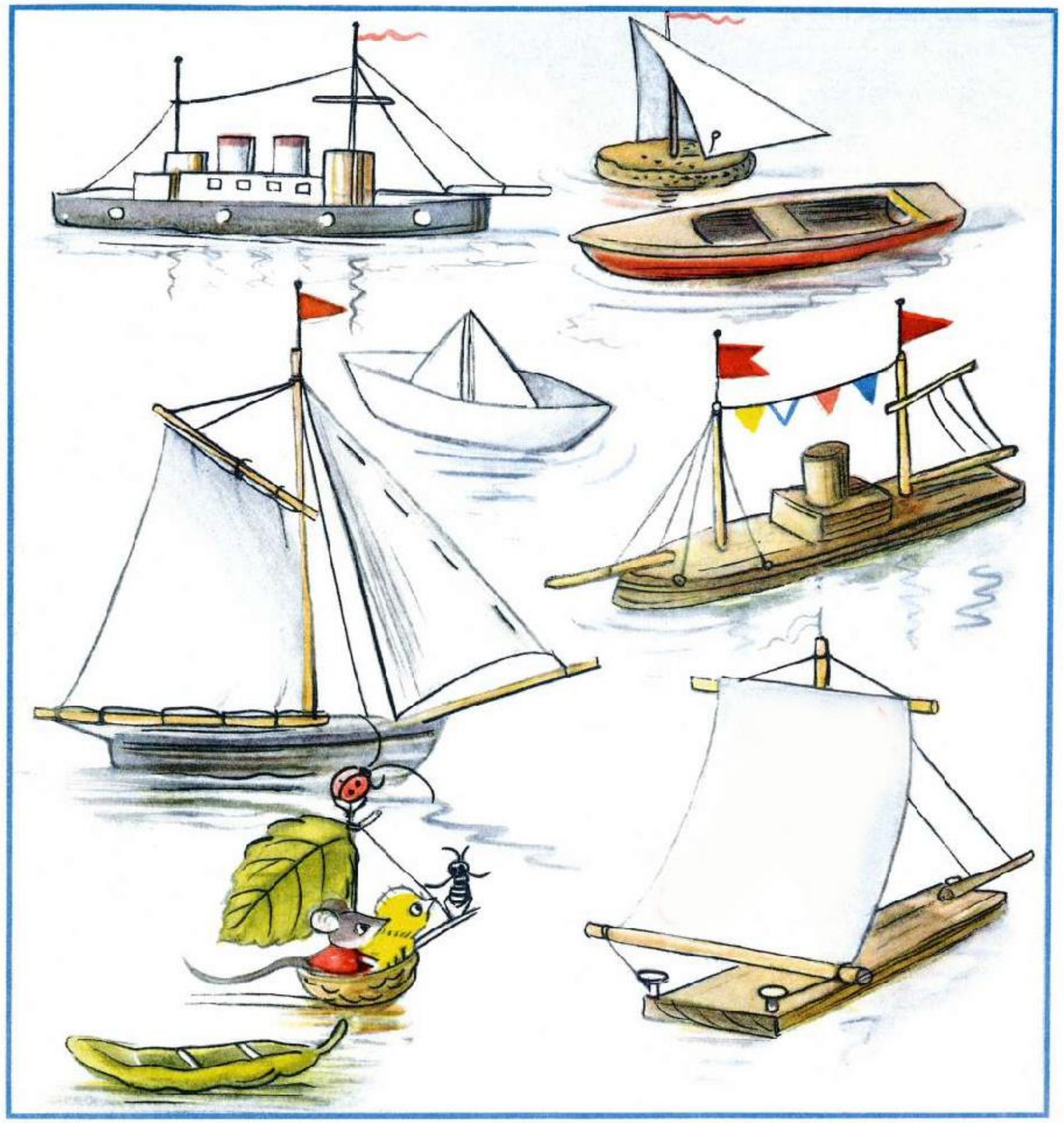


उन्होंने नाव को पानी में धकेला. फिर उसमें सवार हुए और रवाना हुए.



मेंढक ने अपना सिर पानी से बाहर निकाला और फिर से हंसना चाहा, लेकिन तब तक नाव बहुत दूर निकल चुकी थी.

नाव इतनी दूर चली गई थी कि मेंढक उसे पकड़ नहीं सकता था!



आप लकड़ी, पेड़ की छाल या बोतल के ढक्कनों से भी ऐसी नाव बना सकते हैं. आप कागज़ या मटर की फली के छिलकों से भी नाव बना सकते हैं. ऐसी नावें बनाने की कोशिश करें - यह बहुत अच्छी तरह से तैरेंगी!

